कबूतर का जोडा और शिकारी

एक जगह एक लोभी और निर्दय व्याध रहता था। पक्षियों को मारकर खाना ही उसका काम था। इस भयंकर काम के कारण उसके प्रियजनों ने भी उसका त्याग कर दिया था। तब से वह अकेला ही, हाथ में जाल और लाठी लेकर जंगलों में पक्षियों के शिकार के लिये घूमा करता था ।

एक दिन उसके जाल में एक कबूतरी फँस गई। उसे लेकर जब वह अपनी कुटिया की ओर चला तो आकाश बादलों से घिर गया। मूसलधार वर्षा होने लगी। सर्दी से ठिठुर कर व्याध आश्रय की खोज करने लगा। थोडी दूरी पर एक पीपल का वृक्ष था। उसके खोल में घुसते हुए उसने कहा, "यहाँ जो भी रहता है, मैं उसकी शरण चाहता हूँ। इस समय जो मेरी सहायता करेगा उसका जन्मभर ऋणी रहूँगा।"

उस खोल में वही कबूतर रहता था जिसकी पत्नी को व्याध ने जाल में फँसाया था। कबूतर उस समय पत्नी के वियोग से दुःखी होकर विलाप कर रहा था। पति को प्रेमातुर पाकर कबूतरी का मन आनन्द से नाच उठा। उसने मन ही मन सोचा, "मेरे धन्य भाग्य हैं जो ऐसा प्रेमी पति मिला है। पति का प्रेम ही पत्नी का जीवन है। पति की प्रसन्नता से ही स्त्री-जीवन सफल होता है। मेरा जीवन सफल हुआ।"

यह विचार कर वह पति से बोली, "पतिदेव! मैं तुम्हारे सामने हूँ । इस व्याध ने मुझे बाँध लिया है। यह मेरे पुराने कर्मों का फल है। हम अपने कर्मफल से ही दुःख भोगते हैं। मेरे बन्धन की चिन्ता छोडकर तुम इस समय अपने शरणागत अतिथि की सेवा करो। जो जीव अपने अतिथि का सत्कार नहीं करता उसके सब पुण्य छूटकर अतिथि के साथ चले जाते हैं और सब पाप वहीं रह जाते हैं।"

पत्नी की बात सुनकर कबूतर ने व्याध से कहा, "चिन्ता न करो वधिक ! इस घर को भी अपना ही जानो। कहो, मैं तुम्हारी कौन सी सेवा कर सकता हूँ?"

व्याध, "मुझे सर्दी सता रही है, इसका उपाय कर दो।"

कबूतर ने लकडियाँ इकठ्ठी करके जला दीं। और कहा, "तुम आग सेक कर सर्दी दूर कर लो।"

कबूतर को अब अतिथि-सेवा के लिये भोजन की चिन्ता हुई। किन्तु, उसके घोंसले

में तो अन्न का एक दाना भी नहीं था। बहुत सोचने के बाद उसने अपने शरीर से ही व्याध की भूख मिटाने का विचार किया। यह सोच कर वह महात्मा कबूतर स्वयं जलती आग में कूद पडा। अपने शरीर का बलिदान करके भी उसने व्याध के तर्पण करने का प्रण पूरा किया।

व्याध ने जब कबूतर का यह अद्‌भुत बलिदान देखा तो आश्चर्य में डूब गया । उसकी आत्मा उसे धिक्कारने लगी। उसी क्षण उसने कबूतरी को जाल से निकाल कर मुक्त कर दिया और पक्षियों को फँसाने के जाल व अन्य उपकरणों को तोड-फोड कर फैंक दिया।

कबूतरी अपने पति को आग में जलता देखकर विलाप करने लगी। उसने सोचा, "अपने पति के बिना अब मेरे जीवन का प्रयोजन ही क्या है? मेरा संसार उजड गया, अब किसके लिये प्राण धारण करुँ?" यह सोच कर वह पतिव्रत भी आग में कूद पडी। इन दोंनों के बलिदान पर आकाश से पुष्पवर्षा हुई। व्याध ने भी उस दिन से प्राणी-हिंसा छोड दी।

कगउर का ऐडै ाउर मिकारी

ाक ऐगऊ ाक लर्डो ाउर निरग्रु वहुण रऊउ घा। पक्रिय के भारकर ापना ऊी उमका काभ घा। उम ठयंकर काभ क कारल्ल उमक प्रियऐन न र्डो उमका उहुग कर ाम्रिया घा। उग भ वेऊ मकलो ऊी, ऊाघ भ ऐल ाउर लाठी लकर ऐगल भ पक्रिय के मिकार क लिय ष्भ्रा करउ घा।
ाक मिन उमक ऐल भ ाक कगउरी ढमं गई। उम लकर ऐग वऊ मपनी ऊहुरिया की ाउर ाघला उ मुकाम गाडल भ प्पिर गया। मम्नल पार वरम्ह ऊन लगी। मग्री भ ाठ्र कर वहुण मुमय की ाप्रै करन लगा। घर्डो म्ग्री पर ाक पीपल का वृक्ष घा। उमक ापल भ प्पिमउ ऊाग उमन कऊा, "यऊा ऐ र्डो रऊउ ऊ, भ उमकी मरल्ल ााऊउ ऊ। उम मभय ऐ भरी मऊायउ करगा उमका ऐन्क्षर ढल्ली रऊगा।"
उम ापल भ वेऊी कगउर रऊउ घा ऐिमकी पउानी क वहुण न ऐल भ ढमाया घा। कगउर उम मभय पउानी क वियगो भ म्रःापी ऊकर विलाप कर रऊा घा। पति क प्रेमाउ्रु पाकर कगउरी का भन मुनन्नम नाम उठा। उमन भन ऊी भन मऊा, "भर ाठन ठाग ऊ ऐ ाम्रमा प्रीं पति मिला ऊ। पति का प्रम ऊी पउानी का ऐीवन ऊ। पति की प्रमन्नउा म ऊी मी-ऐीवन मढल ऊउ ऊ। भरा ऐीवन मढल ऊमा।" यऊ विमार कर वऊ पति म गली, "पतिम्व! भ उमुान मामन ऊ। उम वहुण न मार गाठ लिया ऊ। यऊ भर पुरान कगलक ढल ऊ। ऊम मपन कगल म ऊी म्रःाप ठगउ ऊ। भर गन्नु की ाचिन्उ छडकर उम उम मभय मपन मरल्लगउ मतिषि की मवा करा। ऐ ऐीव मपन मतिषि का मउ्कार नऊी करउ उमक मग पल्ल छाड़कर मतिषि क माघ ाल ऐउ ऊ ाउर मग पाप वऊी रऊ ऐउ ऊ।"
पउानी की गाउ मनकर कगउर न वहुण म कऊा, "ाचिन्उ न कर वठिक ! उम ष्पर क र्डो मपना ऊी ऐन। कऊ, भ उमुारी कौन मी मवा कर मकउ ऊ?"
वहुण, "भाप मग्री मउा रऊी ऊ, उमका उपाय कर म।"
कगउर न लकडिया उकठी करक ऐला मी। ाउर कऊा, "उम मुग मक कर मग्री मर कर ल।"
कगउर क मग मतिषि-मवा क लिय ठऐन की ाचिन्उ ऊई। किन्उ उमक ष्पमल भ उ म्रन्नका ाक माना र्डो नऊी घा। ग्ऊउ मऊन क गाम उमन मपन मरीर म ऊी वहुण की ठ्रप्र मिटान का विमार किया। यऊ मऊ कर वऊ मऊाउ्म कगउर मञ्च ऐलउी मुग भ कह पऊा। मपन मरीर का गलिमान करक र्डो उमन वहुण क उग्प्र्य करन का प्रल्ल परा किया।
वहुण न ऐग कगउर का यऊ ममाउ्ठउ गलिमान मापा उ मुमन्न भ ऊउ्ु गया। उमकी मुउ्म उम ाठऊ्कन लगी। उमी क्ल्ल उमन कगउरी क ऐल म निकाल कर मऊुकर म्रिया ाउर पक्रिय क ढमान क ऐल व मन्उ उपकरल्ल क उड-ढड कर ढक म्रिया।
कगउरी मपन पति क मुग भ ऐलउा मापिकर विलाप करन लगी। उमन मऊा, "मपन पति क गिना मग भर ऐीवन का प्रयऐन ऊी कहा ऊ? भरा मंमार उऐढ गया, मग किमक लिय प्रल्ल पारल्ल कऊ?" यऊ मऊ कर वऊ पतिवउ र्डो मुग भ कह पऊी। उन मनों क गलिमान पर मुकाम म पुष्पवरम्ह ऊई। वहुण न र्डो उम मिन म प्राल्ली-ाऊंमा छड मी।

मनुवाम - विमहु कौल ऐला